International Research Journal of Human Resources and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor- 5.414, Volume 5, Issue 1, January 2018
Website- www.aarf.asia, **Email** : editor@aarf.asia , editoraarf@gmail.com

''माध्यमिक स्तर के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों में पर्यावरण शिक्षा के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन''

अशरफ उन नबी खान
शोधार्थी, शिक्षा संकाय, बरकतउल्ल विश्वविद्यालय, भोपाल
डॉ. एन.के. कौशिक
प्राचार्य, महाराणा प्रताप कॉलेज ऑफ एजुकेशन, रातीबड़ भोपाल

प्रस्तुत शोधपत्र का उद्देश्य माध्यमिक स्तर के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की पर्यावरण शिक्षा के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना है। इस हेतु न्यादर्श के रूप में 300 विद्यार्थियों {शासकीय (75 छात्र एवं 75 छात्राएं) तथा अशासकीय (75 छात्र एवं 75 छात्राएं)} का चयन कर उन पर पर्यावरण शिक्षा जागरूकता प्रश्नावली का प्रशासन किया गया। प्राप्त परिणामों के अनुसार माध्यमिक स्तर के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के छात्रों की पर्यावरण शिक्षा के प्रति जागरूकता में सार्थक अंतर पाया गया तथा अशासकीय विद्यालयों के छात्रों में पर्यावरण शिक्षा के प्रति जागरूकता, शासकीय विद्यालयों के छात्रों की तुलना में उच्च पाई गयी जबकि छात्रा/विद्यार्थियों की पर्यावरण शिक्षा के प्रति जागरूकता में सांख्यिकीय दृष्टिकोण से सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

मुख्य बिन्दू – माध्यमिक स्तर, पर्यावरण शिक्षा के प्रति जागरूकता

मानव व प्रकृति दोनों के मध्य एक अटूट संबंध है। जीविकोपार्जन के साथ–साथ भौतिक संसाधनों की पूर्ति प्रकृति द्वारा ही होती है। यूनानी विचारक का कथन है कि ''प्रकृति मानव को भोजन, आवास और रेशा उपलब्ध कराकर उसके जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ती करती है। अतः प्रकृति पूजनीय है और स्वयं को दीर्घायु बनाने के लिये प्रकृति की आराधना कर उसे दीर्घायु बनाना ही श्रेयस्कर है।'' लेकिन मानवीय स्वार्थों की पूर्ति हेतु प्रकृति पर नियंत्रण तथा उसके दोहन में निरंतर वृद्धि होती जा रही है। इन अनियोजित मानवीय गतिविधियां का दुष्परिणाम है, प्राकृतिक असंतुलन और पर्यावरणीय प्रदूषण जो दिन प्रतिदिन मानव अस्तित्व के लिये खतरा बनता जा रहा है। प्रकृति के दुष्प्रकोप की कल्पना ने मानव को प्रकृति से सामंजस्य स्थापित करने के लिये तथा पर्यावरण विरूद्ध मानवीय क्रियाकलापों को रोकने एवं पर्यावरणीय सचेतना जागृत करने के लिये सरकारी तथा गैर सरकारी संगठन, समाजसेवी संस्थाएं महत्वपूर्ण भूमिका निर्वाह कर रहे हैं। मीडिया जैसे रेडियो, टेलिविजन, समाचार–पत्र, पत्रिकाएं आदि संचार के माध्यम भी पर्यावरणीय संचेतना जागृत करने में भी पर्यावरण संरक्षण हेतु कार्य कर रहे हैं। इस प्रकार से राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्राथमिक विद्यालय से लेकर विश्वविद्यालयीन स्तर तक अनेक कार्यक्रम किये जा रहे हैं।

© **Associated Asia Research Foundation (AARF)**
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

पर्यावरणीय शिक्षा का मुख्य उद्देश्य भी पर्यावरण तथा मानव के मध्य अन्र्तसंबंधों एवं पारस्परिक निर्भरता का ज्ञान और पर्यावरण के प्रति संचेतना का विकास कर पर्यावरण संरक्षण की अभिवृति व कौशल का विकास करना है। मिश्र (1993) के अनुसार ''पर्यावरण शिक्षा एक प्रक्रिया है जिसके द्वारा मनुष्य को पर्यावरण के प्रति जागरूक करना, ज्ञान कौशल, अभिवृतियों तथा मूल्यों को विकसित किया जाता है। जिससे पर्यावरण का सुधार किया जा सके।''

पर्यावरण के प्रति जागरूकता लाने के लिए आज आवश्यकता है पर्यावरण शिक्षा की। इसी उद्देश्य के लिए 5 जून को ''विश्व पर्यावरण दिवस'' मनाया जाता है। पर्यावरण जागरूकता में केवल सैद्धांतिक पक्ष पर बल दिया जाता है अर्थात ज्ञानात्मक पक्ष तक ही सीमित रहता है। इस प्रकार से पर्यावरण जागरूकता के संबंध में ज्ञान तथा बोध, स्वरूप, घटक, पारस्परिक निर्भरता, समस्याएं तथा उनके समाधान, अध्ययन विषयों के प्रति जागरूकता को महत्व देने की आवश्यकता है जिससे प्रकृति व मानव के मध्य असंतुलन असंरक्षण आदि गम्भीर समस्याओं का निराकरण हो सके। आज व्यक्ति सरल प्राकृतिक जीवन को छोड़कर कृत्रिम जीवन जीने के लिए बाध्य है। कृत्रिम जीवन हमारे सामने अनेकानेक समस्याएं लेकर उपस्थित हुआ है यथा – खाद्य पदार्थो का संदूषण, कुपोषण, मृदा की विषाक्तता, ग्रीन हाउस प्रभाव, कार्बन डाई–ऑक्साइड की प्रतिशत में वृद्धि, जल प्रदूषण आदि में वृद्धि हुई है। वर्तमान में पर्यावरणीय समस्याओं का समाधान करना मानव के जीवन के लिए अत्यंत आवश्यक हो गया है। अतः इसी कारण से शोधकर्ता ने माध्यमिक स्तर के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की पर्यावरण शिक्षा के प्रति जागरूकता का अध्ययन करने का निश्चय किया।

इस संदर्भ में अनेक शोध कार्य किए गये हैं जैसे गुप्ता, यू.पी. तथा अन्य (1981) ने अपने अध्ययन के निष्कर्षतः पाया कि पर्यावरण जागरूकता के बारे में स्कूल जाने वाले ग्रामीण तथा शहरी बच्चों में अन्तर सार्थक था तथा यह स्कूल जाने वाले ग्रामीण बच्चों के पक्ष में था। राजन, मिति (1996) के अध्ययन से यह उद्घटित हुआ कि विज्ञान विषय से सम्बन्ध रखने वाले छात्रों में पर्यावरण जागरूकता कला तथा वाणिज्य विषय पढ़ने वाले छात्रों से अधिक थी। वाणिज्य छात्रों में पर्यावरण जागरूकता सबसे कम पाई गई। स्नात्कोत्तर छात्र तथा छात्राओं के पर्यावरण जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं था। सोनी, आर.वी. (1994) ने अपने अध्ययन में पाया कि शासकीय एवं अशासकीय शालाओं के विद्यार्थियों के पर्यावरणीय मूल्यों में सार्थक अंतर नहीं पाया गया। सिंह (2004) ने अपने अध्ययन में पाया कि विज्ञान वर्ग के छात्रों में पर्यावरणीय जागरूकता कला वर्ग के छात्रों की तुलना में अधिक है। शर्मा (2006) ने अपने अध्ययन में पाया कि छात्रों में पर्यावरण संबंधी जागरूकता छात्राओं की अपेक्षा अधिक है। मेहता (2007) ने पाया कि अध्यापक, अध्यापिकाओं की तुलना में पर्यावरण के प्रति अधिक जागरूक पाये गये। गुप्ता, अनु (2008) के अध्ययन के निष्कर्षतः ज्ञात हुआ कि सरकारी व गैर सरकारी विद्यालयों के अध्यापकों की पर्यावरण जागरूकता में सार्थक अंतर पाया गया।

उद्देश्य

1. माध्यमिक स्तर के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के छात्र/छात्रा/विद्यार्थियों की पर्यावरण शिक्षा के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. माध्यमिक स्तर के शासकीय/अशासकीय विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं की पर्यावरण शिक्षा के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पना

1. माध्यमिक स्तर के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के छात्र/छात्रा/विद्यार्थियों की पर्यावरण शिक्षा के प्रति जागरूकता में सार्थक अंतर नहीं है।
2. माध्यमिक स्तर के शासकीय/अशासकीय विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं की पर्यावरण शिक्षा के प्रति जागरूकता में सार्थक अंतर नहीं है।

न्यादर्श

न्यादश के चयन के लिए भोपाल जिले में स्थित 04 माध्यमिक विद्यालयों (02 शासकीय एवं 02 अशासकीय) का चयन कर इन विद्यालयों की कक्षा 10वीं में अध्ययनरत 300 विद्यार्थियों (150 छात्र एवं 150 छात्राओं) का चयन साधारण यादृच्छिक विधि द्वारा किया गया।

उपकरण

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की पर्यावरण शिक्षा के प्रति जागरूकता का अध्ययन करने के स्वनिर्मित पर्यावरण शिक्षा जागरूकता प्रश्नावली का निर्माण किया गया है।

शोध विधि

सर्वप्रथम भोपाल जिले में स्थित समस्त माध्यमिक विद्यालयों की सूची प्राप्त की गई तथा इस सूची में से 04 माध्यमिक विद्यालयों (02 शासकीय एवं 02 अशासकीय) का चयन कर इन विद्यालयों की कक्षा 10वीं में अध्ययनरत 300 विद्यार्थियों {शासकीय (75 छात्र एवं 75 छात्राएं) तथा अशासकीय (75 छात्र एवं 75 छात्राएं)} का चयन साधारण यादृच्छिक विधि द्वारा कर उन पर पर्यावरण शिक्षा जागरूकता प्रश्नावली का प्रशासन किया गया। प्राप्तांकों के आधार पर मास्टर शीट तैयार की गई। क्रांतिक अनुपात परीक्षण के द्वारा आंकड़ों का विश्लेषण किया गया प्राप्त परिणामों के आधार पर निष्कर्ष निकाले गये।

परिणामों का विश्लेषण

तालिका 01

माध्यमिक स्तर के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के छात्र/छात्रा/विद्यार्थियों की पर्यावरण शिक्षा के प्रति जागरूकता संबंधी तुलनात्मक परिणाम

समूह	विद्यालय का प्रकार	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात मान	'पी' मान
छात्र	शासकीय	75	30.35	8.46	2.86	< 0.01
	अशासकीय	75	34.12	7.60		
छात्रा	शासकीय	75	33.55	8.06	0.92	> 0.05
	अशासकीय	75	32.36	7.86		
विद्यार्थी	शासकीय	150	31.95	8.42	1.39	> 0.05
	अशासकीय	150	33.24	7.78		

स्वतंत्रता के अंश 148, 298 0.05 स्तर पर सार्थकता का मान – 1.98, 1.97

0.01 स्तर पर सार्थकता का मान – 2.61, 2.59

उपरोक्त सारणी में प्रदर्शित परिणामों से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के छात्रों की पर्यावरण शिक्षा के प्रति जागरूकता में सांख्यिकीय दृष्टिकोण से सार्थक अंतर है, क्योंकि प्राप्त क्रांतिक अनुपात का मान 2.86 स्वतंत्रता के अंश 148 पर सार्थकता के 0.01 स्तर के लिए निर्धारित न्यूनतम मान 2.61 की अपेक्षा अधिक है जबकि छात्रा/विद्यार्थियों की पर्यावरण शिक्षा के प्रति जागरूकता में सांख्यिकीय दृष्टिकोण से सार्थक अंतर नहीं है, क्योंकि इनके लिए प्राप्त क्रांतिक अनुपात के मान क्रमशः 0. 92, 1.39 स्वतंत्रता के अंश क्रमशः 148, 298 पर सार्थकता के 0.05 स्तर के लिए निर्धारित न्यूनतम मान 1. 98, 1.97 की अपेक्षा कम हैं।

अतः उपरोक्त परिणामों के आधार पर कहा जा सकता हैं कि माध्यमिक स्तर के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के छात्रों की पर्यावरण शिक्षा के प्रति जागरूकता में सार्थक अंतर पाया गया तथा अशासकीय विद्यालयों के छात्रों में पर्यावरण शिक्षा के प्रति जागरूकता, शासकीय विद्यालयों के छात्रों की तुलना में उच्च पाई गयी जबकि छात्रा/विद्यार्थियों की पर्यावरण शिक्षा के प्रति जागरूकता में सांख्यिकीय दृष्टिकोण से सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

तालिका 02

माध्यमिक स्तर के शासकीय/अशासकीय विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं की पर्यावरण शिक्षा के प्रति जागरूकता संबंधी तुलनात्मक परिणाम

विद्यालय का प्रकार	समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात मान	'पी' मान
शासकीय	छात्र	75	30.35	8.46	2.37	< 0.05
	छात्राएं	75	33.55	8.06		
अशासकीय	छात्र	75	34.12	7.60	1.40	> 0.05
	छात्राएं	75	32.36	7.86		

स्वतंत्रता के अंश 148 0.05 स्तर पर सार्थकता का मान – 1.98

उपरोक्त सारणी में प्रदर्शित परिणामों से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर के शासकीय विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं की पर्यावरण शिक्षा के प्रति जागरूकता में सांख्यिकीय दृष्टिकोण से सार्थक अंतर है, क्योंकि प्राप्त क्रांतिक अनुपात का मान 2.37 स्वतंत्रता के अंश 148 पर सार्थकता के 0.05 स्तर के लिए निर्धारित न्यूनतम मान 2.37 की अपेक्षा अधिक है जबकि अशासकीय विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं को पर्यावरण शिक्षा के प्रति जागरूकता में सांख्यिकीय दृष्टिकोण से सार्थक अंतर नहीं है, क्योंकि प्राप्त क्रांतिक अनुपात का मान 1. 40 स्वतंत्रता के अंश क्रमशः 148 पर सार्थकता के 0.05 स्तर के लिए निर्धारित न्यूनतम मान 1.98 की अपेक्षा कम है।

अतः उपरोक्त परिणामों के आधार पर कहा जा सकता हैं कि माध्यमिक स्तर के शासकीय विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं की पर्यावरण शिक्षा के प्रति जागरूकता में सार्थक अंतर पाया गया तथा छात्राओं में पर्यावरण शिक्षा के प्रति जागरूकता, छात्रों की तुलना में उच्च पाई गयी जबकि अशासकीय विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं की पर्यावरण शिक्षा के प्रति जागरूकता में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

निष्कर्ष

1. माध्यमिक स्तर के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के छात्रों की पर्यावरण शिक्षा के प्रति जागरूकता में सार्थक अंतर पाया गया तथा अशासकीय विद्यालयों के छात्रों में पर्यावरण शिक्षा के प्रति

जागरूकता, शासकीय विद्यालयों के छात्रों की तुलना में उच्च पाई गयी जबकि छात्रा/विद्यार्थियों की पर्यावरण शिक्षा के प्रति जागरूकता में सांख्यिकीय दृष्टिकोण से सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

2. माध्यमिक स्तर के शासकीय विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं की पर्यावरण शिक्षा के प्रति जागरूकता में सार्थक अंतर पाया गया तथा छात्राओं में पर्यावरण शिक्षा के प्रति जागरूकता, छात्रों की तुलना में उच्च पाई गयी जबकि अशासकीय विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं की पर्यावरण शिक्षा के प्रति जागरूकता में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

बाना, वीणा एवं बाना, राजीव (2004) 'पर्यावरण शिक्षा', रिसर्च पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली।

चक्रवर्त्ती, पुरूषोत्तम भट्ट (2006) 'पर्यावरण चेतना', म.प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल।

गोयल, एम. के. (2007–08) 'पर्यावरण शिक्षा', अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा।

जैन, एस.के. (2004) 'पर्यावरण शिक्षा', अग्रसेन शिक्षा प्रकाशन, जयपुर।

खन्ना, आशा एवं श्रीवास्तव, आर.के. (2001) 'प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन एवं पर्यावरण प्रदूषण', म.प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल।

श्रीवास्तव, पंकज (2008) 'पर्यावरण शिक्षा', म.प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल।

उपाध्याय, राधावल्लभ (2007–08) 'पर्यावरण शिक्षा', अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा।

शर्मा, आर.ए. (2008) 'पर्यावरण शिक्षा', आर.लाल बुक डिपो, मेरठ।

श्रीवास्तव, डी. एन. (नवीन संस्करण) 'सांख्यिकीय एवं मापन', विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।

गुप्ता, अनु (2008) 'उच्चतर माध्यमिक स्तर पर सरकारी व गैर सरकारी विद्यालयों के अध्यापकों के मध्य पर्यावरण जागरूकता एवं संवेदनशीलता का तुलनात्मक अध्ययन', Eduquest Vol.- I, April 2008, page no. 66-71.

पर्यावरण पत्रिका, (2006) राष्ट्रीय पर्यावरण अभियांत्रिकी अनुसंधान संस्थान, नागपुर।

Buch, M.B. (1983-88) : **Fourth Survey of Research in Education,** National Council of Education Research and Training, New Delhi, Vol. I & II

Buch, M.B. (1988-92) : **Fifth Survey of Research in Education,** National Council of Education Research and Training, New Delhi, Vol. I & II

© **Associated Asia Research Foundation (AARF)**